VAISESIKA - QUALITY

वैशेषिक - गुण

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

गुण वैशेषिक का दूसरा पदार्थ है।द्रव्य अकेला रह सकता है ,गुण अकेला नहीं रह सकता इसलिए द्रव्य में निवास करता है।इसके बाद भी गुण द्रव्य से अलग चीज है।गुण निष्क्रिय होता है जबकि कर्म सक्रिय है।गुण द्रव्य में अधिक समय तक बना रहता है।कणाद गुण के लक्षणों की चर्चा करते हुए कहा है कि,'गुण वह है जो द्रव्य में समवेत हो,गुण से शून्य हो और कर्म की तरह संयोग-विभाग का साक्षात कारण न हो'।इससे स्पष्ट होता है कि - गुण द्रव्य में समवेत है, जो गुण से शून्य है, जो कर्म से शून्य है, जो संयोग और विभाग का साक्षात कारण नहीं है और जो अपने कार्य का असमवायी कारण है।

गुण में सामान्य रहता है और द्रव्य, कर्म में भी।गुण द्रव्य और कर्म से भिन्न होता है। गुण अकेला नहीं रह सकता बल्कि हमेंशा किसी द्रव्य पर आश्रित रहता है।फिर भी वह द्रव्य से भिन्न पदार्थ है।कभी-कभी यह भी प्रश्न उठता है किजब गुण अपने अस्तित्व के लिए स्वतंत्र नहीं है, तब उसे स्वतंत्र पदार्थ क्यों माना जाता है ? इसके उत्तर में कहा जाता है कि पदार्थ उसे कहा जाता है जिसका नामकरण हो सके, जो ज्ञेय है।गुण का नामकरण होता है, उसका विचार किया जा सकता है, इसलिए इसे स्वतंत्र पदार्थ माना गया है।

कणाद ने गुण के सत्रह प्रकार बताये हैं और प्रशस्तपाद ने इस संख्या में सात और जोड़ दिया।इस तरह वैशेषिक ने गुण चौबीसबताये हैं - रूप(Colour),स्वाद(Taste) ,स्पर्श(Touch) ,गंध(Smell),शब्द(Sound) ,संयोग(Conjunction) ,विभाग(Disjunction),दूरत्व(Remoteness) ,अपरत्व(Nearness), पृथकत्व(Distinctness), परिमाण(Magnitude) ,बुद्धि(Cognition),सुख(Pleasure) ,दुख(Pain),इच्छा(Desire),द्वेष(Aversion) प्रयत्न(Effort), गुरुत्व(Heaviness), द्रवत्व(Fluidity) ,स्नेह(Viscidity),संस्कार(Faculty)संख्या(Number),धर्म(Merit),अधर्म(Demerit)।गुणों का विभाजन सामान्य और विशेष में हुआ है ।सामान्य गुण वह हैं जो एक समय में दो या अधिक द्रव्य में रहते हैं। विशेष गुण वह है जो एक समय में केवल एक ही द्रव्य में रहते हैं ।गुणों को एकेन्द्रीयग्राह्य और द्वेन्द्रीयग्राह्य गुणों में भी बांटा गया है । एकेन्द्रीयग्राह्य वे गुण है जिनका ग्रहण एक ही है बाह्य इन्द्रिय से होता है और जिनका दो

बाह्य इंद्रियों से ग्रहण होता है उन्हें द्विन्द्रीयग्राह्य कहा जाता है ।इनके अतिरिक्त कुछ गुण ऐसे भी होते हैं जिनका ग्रहण किसी भी इन्द्रिय से नहीं हो सकता उसे उसे अतिंद्रीय गुण कहा जाता है ,जैसे - गुरुत्व, धर्म ,अधर्म ,संस्कार आदि गुण हैं ।गुणों को नित्य और अनित्य गुणों में भी बांटा जाता है ।नित्य द्रव्य के गुण नित्य होते हैं और अनित्य द्रव्यों के गुण अनित्य। वैशेषिक प्रदत्त चौबीस गुणों को अब एक-एक कर देखा जाएगा।

रूप एक विशेष गुण जिसका प्रत्यक्ष आँख से होता है।यह पृथ्वी, जल और तेजस(Light) में रहता है।इसके सात रूप होते हैं जिनमें श्वेत, नील, रक्त, पीत और हरित आदि प्रमुख हैं।

स्वाद वह विशेष गुण है जिसका प्रत्यक्ष केवल रसना से ही हो सकता है।रस का स्थान पृथ्वी और जल है।रस के छः प्रकार हैं - मधुर ,अम्ल ,कटु,तीता, कषाय और नमकीन।

स्पर्श भी एक विशेष गुण है जिसका प्रत्यक्ष केवल त्वचा से होता है।इसके तीन प्रकार हैं- - शीत, उष्ण और अशीतोष्ण।

गन्ध भी एक विशेष गुण है जिसका प्रत्यक्ष केवल नासिका से होता है और इसका निवास स्थान पृथ्वी है।गन्ध के दो प्रकार हैं - सुगन्ध और दुर्गन्ध।

शब्द भी एक विशेष गुण है इसका प्रत्यक्ष केवल कान से होता है।

अलग रहने वाले दो द्रव्यों के परस्पर मिलना को संयोग कहा जाता है।संयोग के तीन प्रकार हैं - अन्यतर कर्मज ,उभय कर्मज और संयोगज संयोग।

जब दो द्रव्यों में से एक में गति होता है तब जो संयोग होता है उसे अन्यतर कर्मज कहा जाता है ,जैसे - चिड़िया का उड़कर एक खम्भे पर बैठ जाने वाला।

जब दोनों द्रव्यों के गति के कारण जो संयोग होता है उसे उभय कर्मज कहा जाता है , जैसे - दंगल में दो पहलवानों का संयोग।

जब एक संयोग से दूसरा संयोग हो जाता है तब उसे संयोगज संयोग कहा जाता है ,जैसे - हाथ में लिए हुए कलम का टेबुल से संयोग होने पर हाथ का टेबुल के साथ संयोग।

संयोग के विपरीत बिभाग है।बिभाग दो संयुक्त द्रव्यों के अलग हो जाने को कहा जाता है।बिभाग भी तीन प्रकार का होता है - विभक्त द्रव्यों में से एक के गति से होने वाला, दोनों विभक्त द्रव्यों के गति से होने वाला, कभी-कभी एक बिभाग से दूसरा बिभाग।

दुरत्व और अपरत्व 'दूर'और 'निकट'प्रत्यय के आधार हैं।इनमें से प्रत्येक दो प्रकार का होता है -देशिक परत्व और अपरत्व किसी वस्तु के दूर और नजदीक कहने में प्रकट होते हैं।

पृथकत्व किसी द्रव्य का वह गुण है जिससे वह अन्य द्रव्यों से अलग पहचाना जाता है।नित्य द्रव्यों का पृथकत्व अलग होता और अनित्य द्रव्यों का अनित्य।पृथकत्व विशेष से भिन्न है।कलम का पृथकत्व उसे पेंसिल से अलग करता है।

परिमाण के द्वारा छोटे बड़े का भेद दिखता है।परिमाण के चार प्रकार हैं - अणुत्व, महत्व, लम्बाई और ओछापन।परमाणु का परम अणुत्व होता है।नित्य द्रव्यों का परिमाण नित्य और अनित्य द्रव्यों का परिमाण अनित्य होता है।

बुद्धि ईश्वर में नित्य और जीवात्माओं में अनित्य होती है।किसी वस्तु के प्रति अनुराग को ईच्छा कहा जाता है और किसी वस्तु के प्रति विरक्ति को द्वेष कहा जाता है। आत्मा की चेष्टा प्रयत्न कहलाता है।

गुरुत्व वस्तुओं का वह गुण है जिससे वह निचे की ओर गिरती है।गुरुत्व पृथ्वी और जल में होता है।

द्रवत्व बहने का कारण है।यह जल और दूध में पाया जाता है।

स्नेह का अर्थ चिकनापन से है।यह गुण जल में पाया जाता है।

संस्कार के तीन भेद हैं - वेग, भावना और स्थिति स्थापकत्व।बेग गति का कारण है।भावना केवल जीवात्मा में निवास करती है।स्थिति स्थापकत्व कुछ दृश्य वस्तुओं में होता, इसके कारण वस्तुओं को छोड़ने पर पुनः अपने आरम्भिक अवस्था में आ जाता है।

संख्या वह साधारण गुण है जिससे एक,दो, तीन जैसे शब्दों का व्यवहार किया जाता है।

धर्म अधर्म कारण हैं सुख और दुःख के।शरीर और सुख-दुःख के भोग के अन्य साधन धर्म अधर्म के फल हैं।